Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

पर्यावरण की दृष्टि से कबीर की प्रासंगिकता

Pinky Devi*

Gram & Post-Deoban, District-Kaithal, Haryaya-136027

सार - ***मानव-शरीर की रचना जिन पाँच तत्त्वों से हुई है, उन्हीं तत्वों ने उसके चारों ओर जीवन के पोषण के साधन जुटाए हैं। धरती, जल, अग्नि, आकाश व पवन इन्हीं तत्त्वों से प्रकृति में प्रत्येक वस्तु का निर्माण हुआ, जिससे पर्यावरण बनता है। वन, नदियां, पहाड़, फूल-पत्ते, हवा सभी कुछ तो मनुष्यों के जीवन के आधार-स्तम्भ हैं। इनमें से किसी एक का अभाव पूरी मानवता को संकट में डाल सकता है। तकनीकी, औद्योगिक विकास ने मनुष्य को सुविधाएं तो दी हैं, लेकिन उन सुविधाओं के साथ 'मुफ्त उपहार' 'प्रदूषण' का मिला है, वह उन सारे सुखों एवं विकास पर भारी पड़ता है। अंधाधुंध शहरीकरण, वनों का कटाव, कृषि योग्य भूमि का औद्योगिकरण के विस्तार में प्रयोग, वन्य प्राणियों की संख्या में निरन्तर गिरावट, जहरीली होती जा रही हवा मनुष्य के जीवन के लिए नये-नये संकट उत्पन्न कर रही है। छोटे से लाभ के लिए अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है वह।***

----------X----------

कबीर के समय में पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या नही थी, किन्तु वृक्षों, फूल-पत्तों पर दया-भाव, जीवों के प्रति प्रेम और अहिंसा के व्यवहार विषयक उनके विचारों की कड़ियां आज प्रदूषण और जीव हत्या की समस्या से जुड़ती है।

कबीर सृष्टि के कण-कण में ईश्वर का वास मानते हैं। वह ईश्वर की पूजा के लिए भी मालिनी को यही कहकर रोकते हैं-

पाती तोरे मालिनी, पाती पाती जीउ

जिसु पाहुन कउ पाती तोरे सो पाहनु निरजीउ

भूली मालिनी है एउ, सतिगुरू जागता है देउ

ब्रह्मपाती बिस्नु डारी, फूल संकर देव

तीननि देव प्रतखि तारहि, करहि किसकी सेव।[1]

अर्थात् तू जिस पत्थर की पूजा के लिए फूल-पत्तों को तोड़ रही है, वह पत्थर तो निर्जीव है, किन्तु वृक्ष के तो कण-कण में प्राण हैं। वृक्ष की पत्तियों में ब्रह्म, डाली में विष्णु और फूल में शंकर का वास है। जब तू इन देवों को ही नष्ट कर रही है, तो सेवा किसकी करेगी? पद से वृक्षों, फूलों, पौधों के प्रति कबीर की सहानुभूति और करुणा उनकी अनुभूति किसी भी प्रकार से सुंदरलाल बहुगुणा के पर्यावरण प्रेम से कम नही है। उन्होंने तो इस समस्या के बारे में सोचा न होगा, क्योंकि उस समय का मनुष्य गरीबी और शोषण का शिकार था, किन्तु स्वार्थ में इतना अन्धा न था कि बेजुबार, मूक वृक्षों पर निर्ममता से कुल्हाड़ी चलाता। कबीर ने तो मालिनी को फूल पत्ते तोड़ते देखकर ही जो पीड़ा अनुभव की, वह कालजयी बन गयी। यदि आज के मनुष्य का पर्यावरण के प्रति, पशुओं के प्रति निर्मम व्यवहार देखते तो मौन नही रह सकते थे। उनका कुछ भी कह जाना समाज को आइना दिखाकर अपनी कुरूपता का अहसास कराना होता, जो किसी भी दण्ड कानून से अधिक प्रभावी होता।

जीव हत्या:

वन्य पशु, जीव-जन्तु, पर्यावरण के चक्र को सन्तुलित बनाए रखते हैं। प्रकृति ने प्रत्येक जीव को आहार-स्वरूप दूसरे पशु को जन्म दिया है। इसी प्रकार यह व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहती है तो पर्यावरण को खतरा कम होता, परन्तु मनुष्य ने अपने स्वार्थों, अंहकार के वशीभूत होकर निरीह प्राणियों का भी वध करना प्रारम्भ कर दिया। वन्य पशुओं की खाल में भूसा भरवाकर ड्राईंगरूम में सजाना नीरस, सम्पन्नता का प्रतीक माना जाता है। जानवरों की खाल से दैनिक प्रयोग की अनेक वस्तुओं का प्रयोग रोजमर्रा के जीवन में हो रहा है।

कबीर ने जीवों के प्रति दया, मूक पशुओं के प्रति अमानवयीता के व्यवहार का विरोध जैसे बिन्दुओं पर भी अपने विचार रखे हैं। प्रकृति को स्वच्छ पर्यावरण को सन्तुलित बनाने में जंगली जीव कितने उपयोगी हैं, हम जानते हैं। कबीर ने जीवों

www.ignited.in

के साथ हिंसक व्यवहार को धर्म के विरूद्ध बताया था। आधुनिक समय में यह धर्म ही नही, विज्ञान व पर्यावरण से भी सम्बद्ध हो गया है। कबीर के अनुसार जो जीवों पर हिंसा करते हैं, वे पाप के भागी होते हैं।

जीव हनै हिंसा करै, प्रगट पाप सिर होय।

पाप सबै जो देखिया, पुन्य न देखा कोय।।[2]

इसीलिए ईश्वर का बनाया प्रत्येक जीव चाहे वह छोटा हो या बड़ा, दया का पात्र है-

दया कौन पर कीजिए, का पर निर्दय होय।

साई के सब जीव हैं, कीड़ी कुंजर दोय।।[3]

अर्थात् दिल में सभी के लिए दया रखो, निर्दयी न बनो क्योंकि सब ईश्वर के जीव हैं, चाहे चींटी हो या हाथी।

कबीर ने तत्कालीन समाज में धर्म के नाम पर बलि, कभी आखेट, मनोरंजन के लिए शिकार किये जाते देखकर पशुओं की हत्या का विरोध किया था, किन्तु आज का मनुष्य न तो धर्म देखता है, न दया विचारता है। अब जैसे-तैसे पैसे कमाने की चाह, जिह्वा का स्वाद, रोमांच मात्र के लिए पशुओं को अपनी क्रूरता का शिकार बनाता है।

जब मनुष्य ने दूसरे मनुष्य के प्रति ही अहिंसा और करुणा को ताक पर रख दिया है, तो पशु किस कोटि में आते हैं? अपने सुख के लिए वह उन्हें पिंजरांे में बाँधकर रखता है, उनकी खाल के लिए, सींगों के लिए, दांतों के लिए उनका शिकार करता है। सुंदरियों के सौन्दर्य-प्रसाधनों के निर्माण में भी निरीह जीवों को अपनी जान गंवानी पड़ती है। वैज्ञानिकों के शोध-प्रयोेग पहले पशुओं पर ही किए जाते हैं। निष्कर्ष यह कि हर ओर से ये पशु असहाय हो चुके हैं। इसी कारण से कई पशुओं की प्रजातियां लुप्त हो चुकी हैं और कुछ समाप्ति के कगार पर हैं। इसलिए आजकल देश-विदेश में वन्य प्राणियों, पालतू पशु-पक्षियों के प्रति अत्याचार को रोकने के लिए, उनके सरंक्षण के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए, उनमें दया, करुणा, ममता जगाने को स्वैच्छिक संस्थाएं व सरकारें, स्वयंसेवक भी जुट गये हैं।

मांस-भक्षण:

मनुष्य पशुओं से भिन्न माना जाता है, क्योंकि उसमें सोचने की शक्ति और सहानुभूति है। जब वह बिना सोचे या निहित स्वार्थों के वशीभूत होकर जान-बूझकर ऐसे कार्य करता है कि किसी को भी कष्ट पहुंचे, पशु-तुल्य हो जाता है। ऐसा ही कार्य मनुष्यों द्वारा मांस का आहार-रूप में मनुष्य द्वारा प्रयोग किया जाना है। कबीर ने मांस-भक्षण की बडे ही कटु शब्दों में निंदा की है-

मांस अहारी मानई, प्रत्यक्ष राक्षस जानि।

ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।[4]

अर्थात् मांसाहारी को साक्षात् राक्षस मान लेना चाहिए। उनकी तो संगति से भी भक्ति में हानि होती है। जो कार्य मेनका गांधी आज 'हेड्स एण्ड टेल्स' के माध्यम से कर रही है, वह कबीर ने पन्द्रहवीं सदी में सीमित साधनों के बावजूद कर दिखाया था। उनका मानना था कि जीवों का निर्दयतापूर्वक भक्षण करने वालों को नरक मिलता है, लेकिन आज तो वैज्ञानिक खोजों ने ही यह बात सत्य सिद्ध कर दी है। उनके अनुसार मांस का आहार-रूप में प्रयोग करने वाले कई भयंकर बीमारियों का शिकार हो सकते हैं और उन्हें इसी लोक में सदेह नरक के भोग की संभावनाएं बढ़ जाती है, क्योंकि मांसाहार न केवल शारीरिक रोग, बल्कि मानसिक अस्वस्थता को भी जन्म देता है। इसीलिए कटुतम शब्दों में मांसाहार की निंदा कबीर ने की है-

मांस मांस सब एक हैं, मुरगी हिरनी गाय।

आंखि देखि नर खात है, ते नर नरकहि जाय।।[5]

जो व्यक्ति अपनी जिह्वा के क्षणिक स्वाद के लिए ही किसी जीव की हत्या कर सकता है, उसकी मानसिकता शाकाहारी की अपेक्षा क्रूर और हिंसक हो जाती है। उसमें दया, करुणा, ममता जैसे अमानवीय विकारों का घर बन जाता है और अपने पूरे परिवेश को दुष्प्रभावित करता है, क्योंकि मनुष्य के आहार का सीधा संबंध उसकी भावनाओं और विचारों से होता है।

इसीलिए आज मांसाहार के विरोध का प्रचार है, चाहे वह लुप्त होते पशुओं के लिए संरक्षण के लिए हो या फिर स्वयं मनुष्य के स्वयं के हित में, क्योंकि मानव दूसरों के प्रति कितना भी क्रूर हो जाए, वह स्वयं से सर्वाधिक प्रेम करता है। जीव को मारता है, तो अपने सुख के लिए और यदि उन पर दया भी करेगा तो अपने जीवन की रक्षा के लिए।

इसीलिए आज कबीर सरीखे मार्गदर्शक की समाज को आवश्यकता है, जो तुच्छ समझे जाने वाले विषय को भी महत्वपूर्ण समझे। वर्तमान की छोटी समस्या भविष्य में विकराल रूप धारण कर सकती है, विचार कर लोगों को

www.ignited.in

प्रत्येक वस्तु कार्य के अच्छे-बुरे दोनों पक्षों के बारे में बताकर उचित मार्गदर्शन करे। कबीर के समय में ये समस्याएं इतनी विकट थीं, किन्तु आज इनका रूप और अधिक भयंकर होता जा रहा है, जो पर्यावरण और मनुष्य दोनों के लिए ही संकट के बीज बो चुका है।

संदर्भ सूची

1. कबीर समग्र, सं. युगेश्वर, पृ. 722
2. कबीर समग्र, सं. युगेश्वर, पृ. 486
3. कबीर समग्र, सं. युगेश्वर, पृ. 589
4. कबीर समग्र, सं. युगेश्वर, पृ. 485
5. कबीर समग्र, सं. युगेश्वर, पृ. 486

Corresponding Author

Pinky Devi*

Gram & Post-Deoban, District-Kaithal, Haryaya-136027